संकलित परीक्षा - 2

हिंदी ' ब '

कक्षा - IX

निर्धारित समय – 3½ घंटे अधिकतम अंक – 90

निर्देश - (1) इस प्रश्न - पत्र के चार खंड हैं -क, ख, ग, घ।
(2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड - क

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कुछ लोगों का मानना है कि भारत जैसे देश में लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था सफल नहीं है, क्योंकि यहाँ होने वाले चुनावों में धर्म, संप्रदाय, वर्ग, जाति का बोलबाला रहता है। चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशी की योग्यता, शिक्षा, अनुभव तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि का मूल्यांकन करने की बजाय उसकी जाति, धर्म इत्यादि को प्राथमिकता दी जाती है। धन के आधार पर ऐसे बाहुबली चुनाव जीत जाते हैं, जिनके विरुद्ध अनेक मुकदमें दर्ज़ हैं। जिनकी कथनी और करनी में बहुत अंतर होता है, जो भोली - भाली जनता को झूठे चुनावी वायदों में उलझाकर धर्म, जाति के नाम पर बहका कर उनसे वोट प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं। भारत के गाँव में रहने वाली अधिकांश जनता अशिक्षित तथा गरीब है। ऐसे लोगों को जाति या धर्म के आधार पर बड़ी आसानी से खरीदा जाता है। भारत में लोकतंत्र को सफल मानने वाले लोगों का मत इससे बिल्कुल भिन्न है। उनके अनुसार भारत की जनता भले ही गरीब और अशिक्षित हो, भले ही जाति एवं धर्म को महत्त्व देती हो, परंतु देश में हुए आम चुनावों के परिणाम को देखकर यह कहा जा सकता है कि देश में लोकतंत्र की जड़ें अत्यंत गहरी हैं।

(क) कुछ लोगों का मानना है कि भारत जैसे देश में लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था क्यों सफल नहीं है ? 2
(ख) धर्म के आधार पर कैसे बाहुबली चुनाव जीत जाते हैं ? 2
(ग) ग्रामों में रहने वाली अधिकांश जनता को जाति, धर्म के नाम पर आसानी से कैसे खरीदा जा सकताहै? 2
(घ) किस आधार पर लोगों का मानना है कि भारत में लोकतंत्र की जड़े अत्यंत गहरी है ? 2
(ङ) भारत के चुनावों में अधिकांश उम्मीदवारों की किस बात का मूल्यांकन नहीं किया जाता ? 2

खंड - ख

प्रश्न 2. (क) नीचे लिखे शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए – **1x 2 = 2**

विद्या, धरती

(ख)नीचे लिखे शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए मानक रूप लिखिए- **½x 2=1**

कङ्गण, पक्ति

प्रश्न 3. (क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग कीजिए - **½x 2=1**

मछलिया, आगन

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर नुक्ते का प्रयोग करते हुए इन्हें दोबारा लिखिए - **½x 2=1**

आवाज, अशरफी

(ग) संधि कीजिए - **1x 2=2**

वाचन + आलय, पर + उपकार

प्रश्न 4. नीचे लिखे शब्दों में संधि विच्छेद कीजिए - **1x 2=2**

स्वागत, नरेंद्र

प्रश्न 5. (क) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों और मूल शब्दों को अलग-अलग कीजिए - **1x 2=2**

आगमन, असफल

(ख) आई प्रत्यय से दो शब्द बनाइए – **½x 2=1**

प्रश्न 6. (क) निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम-चिह्न लगाइए - **1x 2=2**

(i) बच्चों मेरी ओर देखो **(ii)** तुम्हारी कलम कहाँ है

(ख) दिए गए विराम-चिह्न का नाम बताइए – **1**

?

खंड - ग

प्रश्न 7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) रामन् को मिले किन्हीं दो पुरस्कारों के नाम लिखिए। **1**

(ख) धर्म के स्पष्ट चिह्न क्या हैं ? **2**

(ग) महादेव भाई अपना परिचय किस रूप में देते थे ? **2**

प्रश्न 8. रामन् की खोज भौतिकी के क्षेत्र में क्रांति के समान क्यों थी ? **5**

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

अज़ाँ देने, शंख बजाने, नाक दाबने और नमाज़ पढ़ने का नाम धर्म नहीं है। शुद्धाचरण और सदाचार ही धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं। दो घंटे तक बैठकर पूजा कीजिए और पंचवक्ता नमाज़ भी अदा कीजिए, परंतु ईश्वर को इस प्रकार रिश्वत दे चुकने के पश्चात् यदि आप अपने को दिनभर बेईमानी करने और दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाने के लिए आज़ाद समझते हैं तो इस धर्म को अब आगे आने वाला समय कदापि नहीं टिकने देगा। अब तो आपका पूजा -पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी। सबके कल्याण की दृष्टि से, आपको अपने आचरण को सुधारना पड़ेगा और यदि आप अपने आचरण को नहीं सुधारेंगे तो नमाज़ और रोज़े, पूजा और गायत्री आपको देश के अन्य लोगों की आज़ादी को रौंदने और देश भर में उत्पातों का कीचड़ उछालने के लिए आज़ाद न छोड़ सकेगी।

(क) धर्म क्या है ? 1

(ख) किस धर्म को भविष्य में नहीं टिकने दिया जाएगा ? 1

(ग) भलमनसाहत की कसौटी क्या है ? 1

(घ) सबके कल्याण के लिए क्या करना होगा ? 1

(ङ) लेखक ने भलमनसाहत की कसौटी किसे कहा है ? 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए –

(क) सुखिया के बाहर जाने पर पिता का हृदय क्यों काँप उठता है ? 1

(ख) 'माँग मत', 'कर शपथ' और 'लथपथ' शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है ? 2

(ग) खुशबू रचने वालों को गंदे मुहल्ले के गंदे लोग क्यों कहा गया है ? 2

प्रश्न 11. 'गीत-अगीत' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। 5

प्रश्न 12. ''अगर हिंदू और मुसलमान ईमान से आपस में मुहब्बत करते तो कितना अच्छा होता।'' - हामिद खाँ की इस हार्दिक इच्छा को पूरी करने के लिए किस तरह के प्रयासों की आवश्यकता है ? 5

खंड - घ

प्रश्न 13. दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर 80 -100 शब्दों में कोई एक अनुच्छेद लिखिए। 5

(क) समय का महत्त्व

संकेत-बिंदु :- ● मनुष्य नहीं बलवान है, समय होत बलवान ● मनुष्य के लिए ईश्वरी वरदान ● समय गतिशील है ● मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर ● मानव जीवन की सफलता रूपी रत्न के सदुपयोग में ● इतिहास से कुछ उदाहरण ● समय पारस के समान।

(ख) **पर्यटन के लाभ**

संकेत-बिंदु :- ● देशाटन का दूसरा नाम पर्यटन ● पर्यटन का अर्थ ● पर्यटन से लाभ ● जीवन की वास्तविकता के दर्शन ● संकटों से आमना-सामना ● धैर्य का विकास ● विभिन्न जानकारियों का मिलना ● भ्रमण से विचारों में उदारता ● स्वास्थ्य के लिए लाभदायक ● देश और संस्कृति से परे का ज्ञान।

(ग) **व्यायाम का महत्त्व**

संकेत-बिंदु :- ●शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पौष्टिक भोजन के साथ व्यायाम आवश्यक ● शरीर स्वस्थ तो मन स्वस्थ ● स्वस्थ से कार्य क्षमता का विकास ● भिन्न-भिन्न तरह के व्यायाम ● व्यायाम से लाभ।

प्रश्न 14. अभी पिछले सप्ताह आपका जन्मदिन था। आपके सभी मित्रों ने आपको कुछ-न-कुछ भेंट दी है। आपके मित्र रौनक ने आपको अति सुंदर दीवार घड़ी दी है। यह घड़ी आपके लिए बहुत उपयोगी है। अतः मित्र को धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए। **5**

अथवा

आपका छोटा भाई पढ़ाई में ध्यान नहीं दे रहा है। वह न तो कक्षा में कराया गया कार्य पूरा करता है न ही घर पर आकर किसी भी विषय को याद करता है। अतः पढ़ाई का महत्त्व बताते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

प्रश्न 15. नीचे दिए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए और 20 - 30 शब्दों में इसका वर्णन कीजिए। 5

प्रश्न 16. शहर में बढ़ती गंदगी विषय पर पिता-पुत्र के मध्य संवाद को लगभग 50 शब्दों में लिखिए। 5

प्रश्न 17. आपके घर के पास नया रेस्टोरेंट खुला है जहाँ हर प्रकार के स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था है। इसके लिए 20 - 25 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन लिखिए। 5

प्रश्न 18. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'मुक्त पाठ'(OTBA) के आधार पर दीजिए --

(क) 'उड़ान' परियोजना क्या है, इससे महिला सशक्तिकरण का क्या संबंध है ? 5

(ख) 'लाडली' योजना के अंतर्गत लड़कियों को क्या सुविधाएँ दी जाती हैं ? आपके अनुसार क्या इससे बेटियों को बचाने में कोई मदद मिलेगी ? 5

xxxxxxxxxXxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

मुक्त पाठ्य सामग्री (2015-16)
हिन्दी 'अ' (002) एवं 'ब' (085)
2. विषय : *महिला सशक्तिकरण*

अधिगम उद्देश्य

कक्षा नवीं में 'महिला सशक्तिकरण' के अंतर्गत इस मुक्त पाठ सामग्री में भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में आए सुधार और सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए उठाए गए कदमों पर तथ्यात्मक जानकारी प्रस्तुत की गई है। शिक्षार्थी कक्षा में और अपने परिवार में इस विषय पर चर्चा करेंगे और ऐसी सोच-समझ के वाहक बनेंगे जो समाज में एक ऐसा स्वस्थ वातावरण बनाने में सहायक सिद्ध हो जहाँ नारी सुरक्षित, सम्मानित और सशक्त हो।

आज की नारी में छटपटाहट है आगे बढ़ने की, जीवन और समाज के हर क्षेत्र में कुछ करिश्मा कर दिखाने की, अपने अविराम अथक परिश्रम से नया सवेरा लाने की तथा ऐसी सशक्त इबारत लिखने की जिसमें महिला अबला न रहकर सबला बन जाए। अब यह अवधारणा मूर्त रूप ले रही है। आज स्थिति यह है कि कानून और संविधान में प्रदत्त अधिकारों का संबल लेकर नारी अधिकारिता के लम्बे सफर में कई मील-पत्थर पार कर चुकी है। लेकिन फिर भी उसके लिए अभी कई और मंजिलों को छूना बाकी है।

हम यहाँ इस विषय को आपके अध्ययन हेतु क्यों प्रस्तुत कर रहे हैं? या फिर महिला सशक्तिकरण क्यों जरूरी है? इन प्रश्नों पर आप अपने विद्यालय, परिवार में चर्चा करें। महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को जानें, समझें और समाज में जागरूकता लाने के लिए सतत प्रयासरत रहें।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'
(अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।)

नारी के बिना किसी समाज की रचना संभव नहीं हैं। समाज में नारी एक उत्पादक की भूमिका निभाती हैं। नारी के बिना एक नये जीव की कल्पना नहीं की जा सकती।

महिला सशक्तिकरण, भौतिक या आध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक, सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में शिक्षा की अहम भूमिका है। शिक्षा सम्पूर्ण अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करके विकास और उन्नति के मार्ग खोलती है। यह महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए प्रथम एवं मूलभूत साधन है क्योंकि महिला के शिक्षित होने पर उनमें जागरूकता, चेतना आएगी, अधिकारों की सजगता होगी, रूढ़ियां, कुरीतियां, कुप्रथाओं का अन्धेरा छंटेगा और वैचारिक क्रान्ति से प्रकाश पुंज फूट निकलेगा। शिक्षा के माध्यम से महिलाएं समाज में सशक्त, समान एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका दर्ज करा सकती हैं। शिक्षित महिलाएं न केवल स्वयं आत्मनिर्भर एवं लाभान्वित होती हैं अपितु भावी पीढ़ियां भी लाभान्वित होतीं हैं।

भारत में महिला एवं पुरुष की शिक्षा में विभेदीकरण पाया जाता है। वैश्विक परिदृश्य पर एक नजर डाले तो यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार महिला साक्षरता की स्थिति विश्व के कुछ देशों में इस प्रकार है-

क्र० सं०	देश	साक्षरता (प्रतिशत)
1.	रूस	99.8
2.	चीन	98.5
3.	ब्राजील	97.9
4.	नाईजीरिया	86.5
5.	भारत (2011)	65.46

भारत में साक्षरता (महिला)

क्र० सं०	वर्ष	साक्षरता (प्रतिशत)
1.	1951	8.9

2.	1961	15.4
3.	1971	22.0
4.	1981	29.8
5.	1991	39.3
6.	2001	53.7
7.	2011	65.46

भारत में लिंगानुपात

भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिंगानुपात को देखा जाए तो सदैव 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या उससे कम ही रही है। वर्ष 1951 से लिंगानुपात पर दृष्टि डालें तो इसमें उतार-चढ़ाव आते रहे हैं, परन्तु कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं दिए जिसे निम्न तालिका में देखा जा सकता है-

क्र० सं०	वर्ष	लिंगानुपात
1.	1951	946
2.	1961	941
3.	1971	930
4.	1981	934
5.	1991	927
6.	2001	933
7.	2011	940

यदि हम भारत में लिंग आधारित सामाजिक भेदभाव के बारे में विचार करते हैं तो यह घर से ही प्रारंभ हो जाते हैं। लड़के-लड़कियों के जन्म, खान-पान, पालन-पोषण, उठने-बैठने, बाहर आने जाने, कार्यप्रणाली, स्वास्थ्य आदि के बारे में किया जाने वाला भेदभाव उनके भावी जीवन के प्रमुख अवसरों पर प्रतिकूल असर डालता है। यह स्त्री-पुरूष के बीच गहरी असमानता को जन्म देता है, महिलाओं को हीन भावना और कुंठाओं से ग्रस्त करता है। इस तरह की लैंगिक असमानता हमारे परिवार, समुदाय, समाज और देश की प्रगति के लिए ठीक नहीं है। एक नागरिक होने के नाते हम सबको एक सकारात्मक सोच के साथ मिल-जुल कर लैंगिक असमानता की सामाजिक तस्वीर को बदलने का प्रयास करना चाहिए।

भूमण्डलीकरण के दौर में स्त्री-पुरुष की समानता की दुहाई देने वाले हमारे समाज में बीमार होने पर महिलाओं को गम्भीर स्थिति में ही अस्पताल ले जाया जाता है। आज भी देश में प्रसवपूर्व सेवाएं शोचनीय दशा में हैं। केवल 53.8 प्रतिशत को टिटनेस टॉक्साइड के टीके मिल पाते हैं, 40 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं का रक्त चाप लिया जाता है। अभी भी 2/3 प्रसव घर पर ही हो रहे हैं। केवल 43 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं को प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों की सेवाएं प्राप्त हैं। शिशु जन्म के उपरान्त भी महिलाओं को बहुत कम और कन्या शिशु के मामले में कोई देखभाल उपलब्ध नहीं होती। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में एक लाख पच्चीस हजार महिलाएं गर्भधारण के पश्चात् मौत का शिकार हो जाती हैं। प्रत्येक वर्ष एक करोड़ बीस लाख लड़कियां जन्म लेती हैं लेकिन तीस प्रतिशत लड़कियां 15 वर्ष से पूर्व ही मृत्यु का शिकार हो जाती हैं। गर्भवती महिलाओं पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 72 प्रतिशत गर्भवती महिलाएं निरक्षर हैं। ऐसी स्थिति में वे गर्भधारण करने की उम्र, पौष्टिकता, भारी काम, काम के घण्टों, स्वास्थ्य जांच आदि से वंचित रहती हैं और सब कुछ भगवान पर छोड़ देती हैं। अब महिलाओं को समझना होगा कि आज समाज में उनकी दयनीय स्थिति भगवान की देन न होकर समाज में चली आ रही परम्पराओं का परिणाम है। इस स्थिति को बदलने का बीड़ा महिलाओं को स्वयं उठाना होगा। जब तक वह स्वयं अपने सामाजिक स्तर पर आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं करेगी, तब तक समाज में उनका स्थान गौण ही रहेगा।

इतिहास में कुछ ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ स्त्रियों ने अपनी प्रतिभा, वीरता और साहस का परिचय दिया हैं। बिजली की कौंध सी दमक दिखाती हुई भारत वर्ष के आकाश पटल पर अवतरित हुई मुगल काल में रजिया सुलतान, नूरजहाँ और जोधाबाई ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शासन किया, जीजाबाई ने वीर शिवाजी

को वीरता का पाठ पढाया, रानी पद्मिनी और मीरा बाई ने अलग ही तरह की वीरता दिखाई, 1857 के अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम में रानी लक्ष्मी बाई, और फिर उसके बाद सुभाष चंद्र बोस की सेना की कप्तान लक्ष्मी सहगल, दुर्गा भाभी का योगदान हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई में कौन भूल सकता है? और भी न जाने कितनी ही जुझारू स्त्रियाँ हैं जिनका नाम नहीं जाना गया पर किसी न किसी स्तर पर इनका योगदान अतुलनीय था। इस समय में राजा राम मोहन राय और स्वामी दयानंद सरस्वती का उपकार माने बिना नहीं रह सकते जिन्होंने स्त्री को पुरुष के समकक्ष बनाने की पहल की, राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा के विरूद्ध कानून बनवाया और दयानंद जी ने स्त्री शिक्षा और पर्दा प्रथा को समाप्त करवाने की पहल की। इन दोनों को महिला सशक्तिकरण का प्रणेता, पथ प्रदर्शक और युग प्रवर्तक कहा जाए तो अतिशियोक्ति न होगी!

नारी सशक्तिकरण का मतलब बड़े रोजगार ही नहीं हैं, न ही इसका क्षेत्र महानगरों या शहरों तक सीमित रखा जा सकता है। महात्मा गांधी कहते थे कि गांवों में किसान खुशहाल होंगे तो देश अपने आप खुशहाल हो जाएगा। यह बात नारी सशक्तिकरण पर भी लागू होती है। ग्रामीण महिलाएं सदियों से घर-खेत में पुरुषों के बराबर ही काम करती आयी हैं, लेकिन वहां उन्हें सामंती सोच के कारण दूसरे दर्जे का नागरिक ही माना जाता रहा है। ग्रामीण समाज की सोच बदलने का वक्त अब आ गया है। आज भी हमारी जनसंख्या की बहुसंख्या गांवों में ही है। इसलिए महिलाओं की बेहतरी के लिए गांवों में पहल की जानी चाहिए। ग्राम पंचायतों और स्थानीय निकायों के चुनावों में महिलाओं की बढ़ती संख्या से हालात में बदलाव आना शुरू ज़रूर हो चुका है, मगर इसमें और तेज़ी लाने की ज़रूरत है। करीब आठ दशक पहले सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने एक कविता लिखी थी- 'वह तोड़ती पत्थर।' महिलाएं आज भी करीब-करीब इसी भूमिका में हैं। खासकर गांवों, कस्बों और छोटे शहरों में। उन्हें अपने श्रम का समान मूल्य नहीं मिलता। घर संभालने और बच्चों को पालने को तो उनका नैसर्गिक दायित्व ही माना जाता है। ऐसा है भी, मगर इसमें लगने वाले उनके समय और श्रम का शायद ही कभी कोई आकलन किया गया हो। हालांकि यह भी एक 'उत्पादक' कार्य है और किसी भी समाज या देश की प्रगति तथा खुशहाली में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

आज महिलाएं घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर रूढ़ीवादी प्रवृत्तियों को पार कर विभिन्न व्यवसायों एवं सेवाओं में कार्यरत हैं, जिनसे आर्थिक आत्मनिर्भरता भी आ रही है। वे केवल आर्थिक रूप से सुदृढ़

ही नहीं हुई, अपितु समाज एवं परिवार की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने प्रारम्भ हो गए हैं। महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं के बल पर आगे बढ़ रही हैं और ये संकेत मिलना शुरू हो गया है कि चाहे सामाजिक क्षेत्र में शिक्षा हो, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा या अन्य शिक्षा हो, सभी जगह महिलाओं ने अपना परचम फहराया है। चाहे संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा हो या राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा या अन्य प्रतियोगी परीक्षाएं हों महिलाएं कहीं भी पीछे नहीं हैं। बैंकिंग, आईटी, मेडिकल, शिक्षा, इंजिनियरिंग, बिजनेस और उद्यमिता हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है। देश भर में 10 वीं और 12 वीं की परीक्षाओं में हर साल लड़कियां ही लड़कों से बाजी मारती रही हैं। खेलों, फिल्मों, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं, पत्रकारिता, लेखन आदि में भी महिलाओं ने अपने आपको स्थापित किया है। डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रोफेसर, जज, प्रशासनिक अधिकारी जैसे पदों पर महिलाएं आ रही हैं। राजनीति में तो वार्ड पंच, सरपंच, प्रधान, प्रमुख, विधानसभा सदस्य, लोकसभा सदस्य, राज्य सभा सदस्य, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे पदों पर अपना दमखम दिखाने में पीछे नहीं हैं।

आज के युग में महाकवि निराला, जिन्होंने लिखा 'तोड़ो तोड़ो कारा तोड़ो' और कैफ़ी आज़मी जिन्होंने कहा तुमको मेरे साथ ही चलना होगा- आदि लिख कर महिलाओं का आह्वाहन किया कि वो मुख्य धारा में आए, अपने बंधनों से मुक्त हों और पुरुषों के साथ कंधों से कन्धा मिला कर चलें! महिलाओं को भी ये समझना चाहिए की अधिकार मांगने से नहीं मिलते, अपितु उनके लिए संघर्ष करना ही पड़ता है, कोई भी आपको थाली में सजा कर उपहार स्वरुप आपके अधिकार नहीं देता।

देश के संविधान में महिलाओं को सदियों पुरानी दासता एवं गुलामी की जंजीरों से मुक्ति दिलाने के प्रावधान किए गए हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 19, 21, 23, 24, 37, 39(बी), 44 तथा अनुच्छेद 325 स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकारों की पुष्टि करते हैं।

वर्तमान समय में लोग बेटियों को बोझ नहीं समझें और दुनिया में आने से पहले मारे नहीं इसलिए सरकार ने बहुत सारी योजनाओं की शुरुआत की है-

लाडली योजना

लाडली योजना को दिल्ली सरकार द्वारा सन 2008 में लागू किया गया। जनवरी 2008 और उसके बाद पैदा हुई लड़कियों को जन्म से ही इस योजना का लाभ मिल रहा है। लाडली योजना के अंतर्गत दिल्ली

के किसी भी अस्पताल / नर्सिंग होम अथवा संस्था में जन्म लेने वाली बालिका को 11,000 रुपये दिए जाते हैं और यदि बालिका का जन्म इसके अलावा कहीं और हुआ हो तो उसे 10,000 रुपये दिए जाने का प्रावधान है। यह धनराशि बालिका के खाते में जमा करवाई जाती है। इसके अलावा कक्षा एक, छह और नौ में दाखिले के समय भी बालिका के खाते में प्रत्येक बार पांच हजार रुपये जमा करवाए जाते हैं। कक्षा 10 पास करने पर तथा 12वीं में दाखिला लेने पर भी 5-5 हजार रुपये इनके खाते में जमा करवाए जाने का नियम लाडली योजना में है। 18 वर्ष की उम्र पूरी करने पर और कक्षा 10 उत्तीर्ण करने के बाद ही बालिका इस पूरी रक़म को ब्याज सहित अपने खाते से निकाल सकती है।

किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए राजीव गांधी योजना (आर.जी.एस.ई.ए.जी) - सबला

11-18 वर्ष के आयु वर्ग में किशोरियों के पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार लाने और जीवन कौशल, स्वास्थ्य और पोषण में शिक्षा प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए राजीव गांधी योजना सबला नवम्बर, 2010 में शुरु की।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना'

वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने देश में लड़कियों के साथ भेदभाव रोकने के लिए एक नए अभियान की शुरुआत की है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' नाम के इस अभियान का जोर खासतौर से कन्या भ्रूणहत्या को रोकने पर है। बालिकाओं के अस्तित्व को बचाने, उनके संरक्षण और सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने के लिए समन्वित और सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता है जिसके लिए सरकार ने "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" पहल की घोषणा की है। इसे एक राष्ट्रीय अभियान के माध्यम से कार्यान्वित किया जाएगा और सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से उन 100 जिलों का चयन किया जाएगा जहाँ बाल लिंग अनुपात सबसे कम है और फिर वहां विभिन्न क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित कर कार्य किया जाएगा। यह महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की संयुक्त पहल है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम।

2. बालिकाओं के अस्तित्व को बचाना और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना।

3. बालिकाओं की शिक्षा और भागीदारी सुनिश्चित करना।

उड़ान परियोजना - एक कार्यक्रम जो छात्राओं को पंख दे

UDAAN

A program to give wings to girl students

स्कूल स्तर पर विज्ञान और गणित के शिक्षण को समृद्ध करने हेतु एवं स्कूल शिक्षा और इंजीनियरिंग प्रवेश द्वार के बीच शिक्षण की खाई को पाटने के लिए, सी.बी.एस.ई ने एक परियोजना शुरू की है जिसमें देश में प्रमुख इंजीनियरिंग कॉलेजों की प्रवेश परीक्षा हेतु कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं की छात्राओं को नि:शुल्क ऑनलाइन संसाधन प्रदान कराये जा रहे हैं।

उड़ान परियोजना का उद्देश्य है प्रतिष्ठित संस्थानों में छात्राओं के कम नामांकन अनुपात को संबोधित करना एवं इन संस्थानों में प्रवेश के लिए प्रोत्साहित करना। इसके अलावा इस परियोजना का उद्देश्य है कि स्कूलों से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ऊंची उड़ान भरने की इच्छुक छात्राओं को सक्षम किया जाए ताकि वे भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व की भूमिका में आ सकें।

महिला सशक्तिकरण किसी कानून के तहत नहीं हो सकता। हाँ, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार कम हो सकते हैं पर उनका सशक्तिकरण करने के लिए हमें भारत की बुनियादों में जा कर ही हल ढूँढना होगा। भारत की बुनियाद भारत के गाँव हैं। गाँवों में सरकार को ऐसे कार्यक्रम चलाने होंगे जो घर-घर में महिलाओं को उनके हक के बारे में बताए और उनके प्रति संवेदनशील बनाएँ। जब वह अपने स्वत्वाधिकार के बारे में जानने लगेंगी तो उनकी पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक मुख्य धारा में क्रियाशील सहभागिता होने लगेगी और स्थिरतापूर्वक वो सशक्त होती रहेंगी। जिस तरह सरकार के प्रयासों से हमने पोलियो को अपने देश से निकाल फेंका है, ठीक उसी तरह महिलाओं पर चढ़े इस नक़ाब को भी देश-निकाला दिया जा सकता है। ज़रूरत है एक देशव्यापी प्रयास की, सही मायनों में इस दिशा में कदम बढ़ाने की, इन सभी आंदोलनों में स्वयं महिलाओं को खुद अग्रिम पंक्ति में खड़ा होना होगा क्योंकि उनके हक की लड़ाई उन्हें खुद लड़नी है।